भीलवाड़ा-राज.। न्यायविदों के लिए 'अध्यात्म के द्वारा न्यायिक सुधार' विषयक सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए बायें से आई.सी.ए.आई. के प्रेसीडेंट अरुण काबरा, टैक्स बार एसोसिएशन के प्रेसीडेंट के.सी. बाहेती, बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेंदर काचोलिया, प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. लता, प्रभाग संयोजक बी.एल. माहेश्वरी, न्यायमूर्ति बी.डी. राठी, जज डॉ. मोहित शर्मा तथा ब्र.कु. तारा।

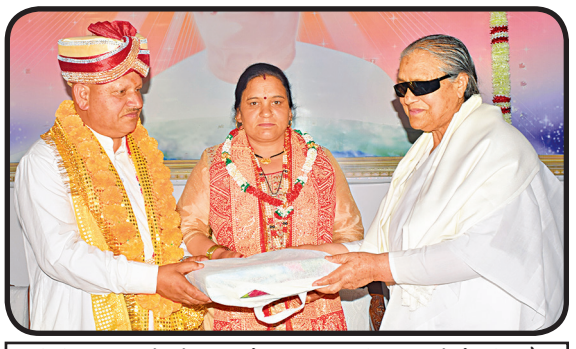

मण्डी-हि.प्र.। करसोग के नवनिर्वाचित विधायक हीरा सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट कर बधाई देते हुए ब्र.कु. शीला।

दिल्ली-लोधी रोड। महात्मा गांधी जलवायु परिवर्तन नियंत्रण संस्थान,दिल्ली सरकार में 'खुशनुमा जीवन शैली' विषय पर संगोष्ठी के पश्चात् समूह चित्र में निदेशक डॉ. बी.सी. साबत, सहायक निदेशक डॉ. रविन्द्र, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा, ब्र.कु. दीपिका तथा प्रतिभागी।

गोला गोकर्ण नाथ-उ.प्र.। चैती मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का रीबन काटकर उद्घाटन करते हुए चेयरमैन मिनाक्षी अग्रवाल। साथ हैं विधायक अरविंद गिरी, विधायक रोमी साहनी, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

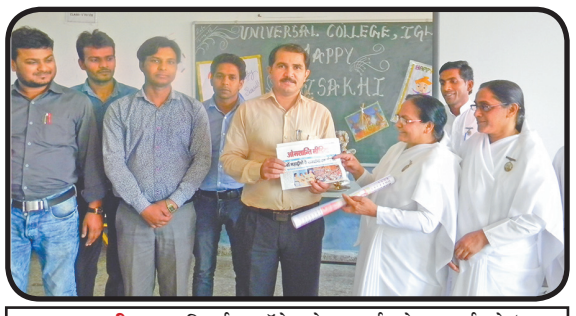

इगलास-अलीगढ़। यूनिवर्सल कॉलेज के प्राचार्य मुकेश शर्मा को 'व्यसन मुक्ति' कार्यक्रम के पश्चात् ओम शांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. हेमलता। साथ हैं कॉलेज स्टाफ, ब्र.कु.शांता तथा अन्य।

भरथना-कानपुर(उ.प्र.)। चेयरमैन हाकिम सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता तथा ब्र.कु. किरण।

माँ का 'मम्मा स्वरूप'

-ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मम्मा का जो प्यार था, मम्मा का जो दुलार था, जो व्यक्तित्व था, वह इतना प्रभावशाली था कि बाबा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं का मूर्तरूप था। योगी के लिए गाया हुआ है कि उसका व्यक्तित्व परान्त सुखाय होता है, उसके मन में सबके प्रति सद्भावना रहती है, सबके प्रति प्रेम रहता है। वह किसी का भी बुरा नहीं सोचता, वह सबका भला सोचता है।

मम्मा के जीवन में एक चुम्बकीय शक्ति थी, वह इस कारण से थी कि उन्होंने सबको शिशुवत् समझा। उनकी यह प्रत्यक्ष अनुभूति थी। व्यवहार उनका ऐसा था जैसे वो सचमुच में साक्षात् जगदम्बा थीं चाहे उनकी आयु कुछ भी हो। आप सोचिये, यह देह-अभिमान खत्म हो गया ना! जब आयु का भान नहीं, पुरुष है, स्त्री है इसका भान नहीं, शत्रु है या मित्र इसका भान नहीं। किसी भी चीज़ का देह-अभिमान नहीं तो वह योगी होगा ना! बिना योग के देह-अभिमान कैसे चला गया? योग की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। योगबल से ही विजय प्राप्त होती है। विजयमाला का मणका बनता है। तो यह हमने मम्मा की ज़िन्दगी में प्रैक्टिकल देखा।

भेदभाव रहित बेहद का प्रेम

दिल्ली में एक व्यक्ति था, जो अपनी पत्नी को बहुत तंग करता था। पवित्रता के कारण उसके घर में झगड़ा होता था और वो अपनी पत्नी को पीटता भी था। वो लोगों से अपनी पत्नी की बुराई करते हुए कहता कि यह ऐसे करती है, वैसे करती है। जब से यह सत्संग में जाती है तब से घर में ठीक सेवा नहीं करती, बच्चों की ठीक देखभाल नहीं करती। वह गलत बोलता था। क्योंकि जो असली बात थी पवित्रता की वह कैसे बोल सकता था! एक दिन उस बहन को उसने घर से निकाल दिया। हमने उसको एक महिला आश्रम में रखा, जब तक उनका फैसला न हो।

उस समय रजौरी गार्डन में मम्मा आयी हुई थीं। मैं उस महिला आश्रम के प्रधान को मम्मा से मिलाने के लिए ले जा रहा था। इस बीच जिसने अपनी पत्नी को घर से बाहर निकाला था उस व्यक्ति को यह समाचार मालूम हुआ कि मम्मा वहाँ आयी हुई हैं। वह हमसे पहले ही सेन्टर पर पहुँचा और दरी यहाँ-वहाँ फेंकी, बल्ब तोड़ा, कुर्सियों को इधर-उधर फेंक दिया। काफी तमाशा दिखाया, जोश दिखाया और झगड़ा भी किया। वह बोलने लगा, मम्मा कहाँ है, मम्मा से मेरी बात कराओ, आज मैं अपना फैसला कराके ही जाऊंगा। बहनें तो डर गयी थीं कि वह झगड़ा करने आया है, हम कैसे उसको शान्त करें! कोई भाई उस समय वहाँ नहीं था। मम्मा सबसे ऊपर की मंज़िल पर थीं। उसने फिर बोला, मम्मा कहाँ है? आप लोगों ने मम्मा को छिपाकर रखा है, बाहर क्यों नहीं आती?

मुझे उनसे बात करनी है। मेरे से बात कराओ। ऐसा कहते हुए वह सबसे ऊपर की मंज़िल पर गया। वहाँ एक चारपाई थी और एक कुर्सी थी। कुर्सी पर मम्मा बैठी थी। जब वह व्यक्ति वहाँ पर गया तो मम्मा कुर्सी से उठी और चारपाई पर बैठ गयी। मम्मा ने उससे कहा, ''आओ बच्चे, आओ। बैठो, कैसे आये हो?'' बहुत प्यार से उसको कहा। आओ बच्चे, कुर्सी पर बैठो! मम्मा के इन शब्दों को सुनते ही वह पानी-पानी हो गया और सच्चे मन से मम्मा, माँ कहने लगा। वह अपना प्रश्न ही भूल गया। केवल माँ, माँ, माँ, कहता रहा। मम्मा कहने लगी, ''बोलो बच्चे, कैसे आना हुआ?'' वह कहने लगा, कुछ नहीं माँ, कुछ नहीं। वह मम्मा से इतना प्रभावित हुआ कि वह शान्ति और आनन्द की अनुभूति में खो गया। मम्मा ने उससे कुछ कहा नहीं था, सिर्फ कहा था कि कैसे आना हुआ। फिर मम्मा ने कहा, ''आओ बच्चे, यहाँ बैठो कुर्सी पर।'' वह बड़ी नम्रता से कहने लगा, ''नहीं माँ, मैं यहीं नीचे बैठूंगा, यहीं ठीक है।'' मम्मा ने फिर कहा तो वह कुर्सी पर बैठ तो गया लेकिन जब अपनी बात बताने का समय आया तो बता नहीं पाया। मम्मा को देखता रहा। शान्ति से देखता रहा। मम्मा ने भी उसको दृष्टि दी। उस दृष्टि से उसको बहुत लाभ हुआ और अनुभव भी हुआ। फिर वह वहाँ से चला गया। बाहर जाकर बोलने लगा कि मम्मा तो बहुत अच्छी है। वह मम्मा के मातृत्व से इतना प्रभावित हुआ कि उसका मन बहुत हल्का हो गया और कहने लगा कि मम्मा कितनी महान है! उसका मन परिवर्तित हो गया। फिर उसने मम्मा से कहा, ''मम्मा, मैं फिर कभी आऊंगा''। ऐसे कहकर वह चला गया। मम्मा ने उससे यह नहीं पूछा–तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, किससे पूछकर अन्दर आये? बल्कि बहुत प्यार से उससे बात की, उसको सम्मान दिया। जिससे उसका मन परिवर्तित हो गया।

अम्बाला छावनी। अन्तर्राष्ट्रीय मातृ दिवस पर 'प्रेम की जादुई शक्ति' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन सम्बोधित करते हुए हरियाणा राज्य महिला आयोग की सदस्य नम्रता गौड़। साथ हैं इनर व्हील क्लब की प्रधान नीना मल्होत्रा, ब्र.कु. कृष्णा, शिक्षाविद सुशीला सरोहा, ब्र.कु. शैली तथा अन्य।

बरनाला-पंजाब। ए.डी.सी. प्रवीण कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ब्रिज। साथ हैं अन्य भाई बहनें।